फोटो: साभार चाय प्रोजेक्ट

चाय से खिली मुस्कान

डैनियल बी. हैबर

अमेरिका की कॉफी कंपनी स्टारबक्स की सहयोगी कंपनी भारत के चाय बागानों के मजदूरों की मदद में जुटी।

दार्जिलिंग का पुसिम्बिंग चाय बागान क्षेत्र उन इलाकों में शामिल है जिन्हें चाय परियोजना के तहत मदद दी गई है।

''चाय मूल तत्व है-आत्मा की तरह, जबकि कुल्हड़ शरीर की तरह है।'' दार्जिलिंग में चल रही *चाय* परियोजना के प्रबंधक डॉ. संजय गुरुंग चाय को लेकर अपना दर्शन कुछ इसी तरह समझाते हैं। गुरुंग याद करते हैं कि किस तरह से स्टारबक्स के स्टोरों का प्रबंध संभालने वाले करीब 3,000 अमेरिकी प्रबंधक उनके द्वारा कुल्हड़ की खूबियां गिनाने पर मंत्र-मुग्ध थे। गुरुंग ने उन्हें भारतीय रेलगाड़ियों में सामान्य तौर पर एक बार ही प्रयुक्त होने वाले पर्यावरण-मित्र कुल्हड़ के बारे में बताने के साथ ही यह भी समझाया कि किस तरह कुल्हड़ की तुलना मानव शरीर से की जा सकती है।

यह देखना खासा अजीब लग सकता है कि कॉफी पीने वालों लोगों यानी अमेरिकियों और और उनके कॉफी के सबसे बड़े खुदरा विक्रेता स्टारबक्स को एक भारतीय व्यक्ति चाय के बारे में बताए। लेकिन सिएटल, वाशिंगटन की कॉफी कंपनी स्टारबक्स से जुड़ी एक चाय कंपनी भी है-ताजो टी। ताजो ओरगॉन, पोर्टलैंड की कंपनी है। इसने पोर्टलैंड के ही दूसरे संगठन मर्सी कॉर्प्स के साथ मिलकर एक परियोजना तैयार की है-जिसे द *चाय प्रोजेक्ट* नाम दिया गया है। इस परियोजना *कोलाबोरेशन फॉर होप एंड एडवांसमेंट इन इंडिया* का संक्षिप्त रूप है सीएचआईए यानी *चाय*। और हां, जैसा कि हर भारतीय जानता है कि सीएचएआई का मतलब होता है चाय।

ताजो दार्जिलिंग चाय की परंपरागत खरीददार रही है। उसने अपने साझेदारों को इस बात के लिए सहमत किया है कि वे दार्जिलिंग के चाय उगाने वाले इलाकों के सामुदायिक विकास के लिए करीब दस लाख डालर लगाएं जिससे कि 24 समुदायों के करीब 11,000 लोगों की जिंदगी कुछ बेहतर हो सके। इस साल यह परियोजना चाय उगाने वाले दूसरे बड़े इलाके असम में विस्तार के लिए तैयार है। इस परियोजना पर अमल कराने वाली संस्था *मर्सी कॉर्प्स* को एशिया में आपदाग्रस्त क्षेत्रों में राहत कार्यों के लिए जाना जाता है, लेकिन वह अब विकास सहायता की तरफ उन्मुख है।

जब दुनिया दार्जिलिंग और असम में पैदा होने वाली बेहतरीन चाय की चुस्कियां लेती है, तब शायद ही किसी को यह अहसास होता है कि इन चाय की पत्तियों को तोड़ने वाले लोग समाज के हाशिये पर हैं और गरीबी की जिंदगी बसर करते हैं।

जब अठारहवीं शताब्दी में दार्जिलिंग की पहाड़ियों में ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने पहली बार चाय उगाने की शुरुआत की थी, तो इस इलाके की जनसंख्या बहुत कम थी और पड़ोसी देश नेपाल से मजदूरों को लाया गया। आज भी दार्जिलिंग के पहाड़ों में नेपाली समुदाय का ही बहुमत है। दार्जिलिंग पश्चिम बंगाल के उत्तर में अर्ध-स्वायत्त इलाका है, जिसका प्रशासन दार्जिलिंग गोरखा पर्वतीय परिषद के हाथों में है। पश्चिम बंगाल के उत्तरी इलाकों और सिक्किम में आज भी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा नेपाली ही है।

चाय परियोजना को मूल रुप से दार्जिलिंग के चाय उगाने वाले समुदायों के लिए ही तैयार किया गया था, पर जमीनी आकलनों से पता चला कि इस क्षेत्र से सटे आसपास के कुछ गांवों को भी मदद की जरुरत है। *चाय* परियोजना में शामिल 24 समुदायों में दस तो चाय बागानों से हैं, आठ खेती से जुड़े समुदाय हैं और छह जंगलों से संबंध रखने वाले समुदाय हैं। खुली पहल के तहत इन समुदायों के सहभागियों को यह तय करने दिया जाता है कि किस तरह का विकास उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण है। गुरुंग स्पष्ट करते हैं, ''वे सड़क, जल-व्यवस्था, बॉयो गैस कुछ भी तय कर सकते हैं।''

नवंबर में चमकती धूप वाले एक दिन गुरुंग मुझे दूरदराज क्षेत्र के एक समुदाय-पारमेन-टी (परमानेंट सेटलमेंट का संक्षिप्तीकरण) के भ्रमण के लिए ले जाते हैं। यहां *चाय प्रोजेक्ट* एक सफल परियोजना चला रहा है। विश्व के विरासत स्थलों में से एक दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे के प्रसिद्ध बतासिया लूप के सामने के एक कैफे में नाश्ते के बाद दो घंटे तक हमने जीप से तमाम टेढ़े-मेढ़े मोड़ों वाली यात्रा की शुरुआत की। हमने विश्व के दूसरे सबसे ऊंचे रेलवे स्टेशन *घूम* (2,550 मीटर की ऊंचाई) वाले इलाके से यात्रा शुरू की और टाकदा चाय बागान क्षेत्र के एक-दूसरे से जुड़े पन्नों जैसे दिखने वाले चाय के पौधों से हरे-भरे पहाड़ों से गुजरे। यहां से नीचे देखने पर वे प्रागैतिहासिक काल जैसी कंदराएं और घाटियां दिखाई दीं जहां किसी को जूरासिक पार्क के माहौल की तरह डायनासोर घूमते दिखने की उम्मीद हो सकती है। सिंबोग चाय बागान पहुंचने पर हम पूर्ववर्ती चाय बागान मालिक के बंगले पर रुकते हैं, जहां बाद में लंच लेते हैं। यात्रा के दौरान आड़े-तिरछे मोड़ों के चलते आई थकान के बाद ताजा अदरक के रस के सेवन ने जंगल में पैंतालीस मिनट तक घूमने की ताकत दी। हमें यह देखकर अचरज हुआ कि जंगलों में नींबू की झाड़ियां भी थीं। हम ऐसी महिलाएं भी रास्ते में मिलीं, जिनकी पीठ पर रसीले संतरों से भरी हुई डोको (टोकरियां) थीं। ये संतरे मैदानी क्षेत्र में खपत के लिए थे। ये दार्जिलिंग के चाय समुदाय की आय का दूसरा स्रोत हैं। पहले पशुपालन विभाग में काम करने वाले डॉ. गुरुंग कहते हैं, ''यह उस दार्जिलिंग का नमूना है, जो ब्रिटिश द्वारा पूरे इलाके को चाय उत्पादन क्षेत्र में परिवर्तित किए जाने से पहले था।

जैसे ही हम पारमेन-टी गांव के करीब पहुंचे, हमारी मुलाकात गांव के 65 वर्षीय बुजुर्ग मुखिया पदम बहादुर मंगड़ उर्फ मोंडल दाजू और उनके 23 वर्षीय सहयोगी संता कुमार थापा से हुई। वे नीचे की तरफ रहने वाले लोगों को पानी पहुंचाने वाले पाइप को ठीक करने का प्रयास कर रहे थे। हम गांव की तरफ गए जहां करीब 20 परिवार रहते हैं। थापा तमाम पेड़ों और झाड़ियों के बारे में बताते लगे-सागवान, साल आदि। एक खास वृक्ष का इस्तेमाल झाड़ू बनाने के लिए कच्चे माल के तौर पर किया जाता है। यह इस समुदाय की आय का एक और स्रोत है।

हम शहद देने वाली मधुमक्खियों के छत्तों को देखकर भी रुकते हैं। अपने परिवार के छह लोगों में से एक थापा का अपने गांव को छोड़ने का इरादा नहीं है। कुछ महीने पहले तक उनके परिवार की आय पूरे तौर पर उसके स्वर्गीय पिता की पेंशन और मामूली खेती पर निर्भर थी। उसके पिता भारतीय सेना में सिपाही थे और वहां से सेवानिवृत्त हुए थे। थापा *चाय* परियोजना से उसके शुरुआती दिनों से ही जुड़े हैं और अब इसके युवा क्लब के सचिव के तौर पर काम करते हैं। धार्मिक पोस्टरों और कैलेंडरों से सजे उसके घर में बैठकर चाय पीते हुए हमने देखा कि मधुमक्खी पालन के सर्टिफिकेट को वहां खास तौर से गर्व के साथ लगाया गया था। बाद में गुरुंग गांव वालों से स्कूल के एक कमरे में मिलते हैं और बायो गैस इकाई की संभावना पर चर्चा करते हैं। कई गांव वाले महसूस करते हैं कि उनके पास इस इकाई को चलाने के लिए पर्याप्त गोबर नहीं होगा। इस मुद्दे पर अच्छी बहस होती है। मैं नए बने शौचालयों में से एक का प्रयोग करता हूं और सीधे तौर पर अनुभव करता हूं कि *चाय* परियोजना ने किस तरह से समुदाय को लाभ पहुंचाया है।

दार्जिलिंग जिले के डेरी गांव में किराना की एक दुकान जिसे चाय परियोजना की मदद से स्वयं सहायता समूह द्वारा चलाया जा रहा है।

पारमेन-टी को छोड़ने से पहले हम रेखा थापा से मिलते हैं। बीस से पच्चीस साल के बीच की उम्र वाली रेखा थापा नई और शायद इसकी सबसे युवा उद्यमी हैं। *चाय यूथ प्रोग्राम* द्वारा दिए गए पांच हजार रुपये के कर्ज से उन्होंने एक दुकान खोली है, जहां वह नमक, साबुन, मसाले, चावल, खाना पकाने का तेल और अंडे बेचती हैं। वह अपने पति राकेश की सहायता से यह दुकान चलाती हैं और करीब 200 रुपये रोज कमाती हैं। अपनी ग्रामीण अर्थव्यवस्था में छोटे से कारोबार से यह कमाई कम नहीं है। उन्हें इस बात

अमेरिका में

नेपाली कॉफी

की चुस्कियां

विमला राय कोलाविटो

नेपाल में कॉफी का उत्पादन करने वाले एक जिले कावरे में कॉफी का उत्पादन करने वाला एक किसान।

दार्जिलिंग दुनिया भर में अपनी चाय के लिए मशहूर है लेकिन पड़ोसी देश नेपाल एक और बागानी फसल 'कॉफी' का लाभ उठा रहा है। वहां 1976 में दक्षिण भारत से अरेबिका कॉफी का आयात करके उसकी व्यापारिक खेती शुरू की गई थी और आज नेपाल के 17 से भी अधिक पहाड़ी जिलों में कॉफी उगाई जा रही है।

हालांकि कॉफी की कुल मांग को देखते हुए अभी इसका उत्पादन बहुत ही कम पैमाने पर हो रहा है, फिर भी हाईलैंड कॉफी प्रोमोशन कंपनी लिमिटेड, एवरेस्ट, प्लांटेक तथा गुल्मी कोऑपरेटिव जैसी निजी कंपनियां अमेरिका, जापान तथा कुछ यूरोपीय देशों को संसाधित हरी कॉफी बीन का निर्यात कर रही हैं। वर्ष 2005 में नेपाल ने मात्र 65 टन कॉफी का निर्यात किया। पिछले वर्ष हाईलैंड कॉफी प्रोमोशन कंपनी ने अमेरिका की हॉलैंड कॉफी को 23 टन कॉफी का निर्यात किया। हॉलैंड अमेरिकी खुदरा श्रृंखला स्टारबक्स को कॉफी की आपूर्ति करने वाली प्रमुख कंपनी है।

वर्ष 2002 में यू.एस.एड ने अर्कंसास, अमेरिका के गैरसरकारी विकास समूह विनरॉक इंटरनेशल, नेपाल हाइलैंड कॉफी प्रोमोशन कंपनी, नेपाल कॉफी प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन, अमेरिका की स्पेशियल्टी कॉफी एसोसिएशन ऑफ अमेरिका और अन्य नेपाली संगठनों के साथ भागीदारी शुरू की।

इसका उद्देश्य कॉफी उद्योग का पर्यावरण अनुकूल और सामाजिक लिहाज से टिकाऊ सक्षम विकास करके रोजगार के अवसर बढ़ाना तथा गरीबी दूर करना था। उनकी रणनीति सभी स्तरों पर उत्पाद की गुणवत्ता को बेहतर बनाना है: किसानों के स्तर पर कॉफी के उत्पादन, ग्रामीण स्तर पर कॉफी के संसाधन तथा विपणन व्यवस्था को बेहतर बनाना।

64 वर्षीय तिम्लिसिना जैसे किसान अपनी अन्य फसलों के साथ कॉफी उगाकर इस योजना का लाभ उठा रहे हैं। उसकी सालाना आमदनी में 200 डॉलर तक की बढ़ोतरी हो चुकी है। तिम्लिसिना का फार्म नेपाल के उन 12,000 फार्मों में से एक है जिनमें उक्त सहयोग के तहत कॉफी और चाय की खेती की जा रही है। विनरॉक इंटरनेशनल में दक्षिण एशिया के कृषि कार्यक्रम समन्वयक ल्यूक ए. कोलाविटो का कहना है कि इस योजना के लक्ष्य के अनुसार दो वर्ष के भीतर करीब 6,000 छोटे किसान इन बागानी फसलों के उत्पादन का काम शुरू कर देंगे और लगभग 10 वर्षों में एक लाख किसान कॉफी तथा चाय का उत्पादन करने लगेंगे। कोलाविटो कहते हैं, ''यह छोटे गरीब किसानों को बड़े बाजार का लाभ दिलाने और संकट की घड़ी में नेपाल जैसे देश की मदद का अनुपम उदाहरण होगा।'' – डी. बी. एच.

का भरोसा है कि वह एक साल में इस कर्ज को वापस करने में समर्थ हो जाएंगी। रेखा के दुकान खोलने से पहले गांव वालों को माचिस खरीदने तक के लिए नब्बे मिनट तक पैदल चलकर सिंबोंग जाना पड़ता था। रेखा बताती हैं, ''मैं भविष्य के बारे में आशावान हूं और मुनाफे से अपने कारोबार के विस्तार की योजना है। युवा कर्ज योजना के जरिये मेरे जैसे लोग आत्मनिर्भर हो सकते हैं और सिर्फ खुद को ही नहीं, बल्कि अपने परिवार और समुदाय को भी लाभ पहुंचा सकते हैं।''

चाय बागान बड़े परिवारों में सबको रोजगार देने में सक्षम नहीं हैं। ऐसी सूरत में नौजवानों के पास अपनी क्षमताओं के विविधीकरण और नौकरी तलाशने के खास विकल्प नहीं बचते हैं। लेकिन ये नौजवान समुदाय का भविष्य हैं। डॉ. गुरुंग बताते हैं, ''हमें पता लगा कि गांवों के युवाओं में बेरोजगारी बहुत ज्यादा है। हमारा उद्देश्य है कि इन्हें नेतृत्व कौशल प्रदान किया जाए। उन्हें किसी ऐसे काम के लिए प्रशिक्षित किया जाए जो इस समुदाय के लिए उपयोगी भी हो और कमाऊ भी और उन्हें जीवन में सार्थक भूमिका तलाशने के लिए अपने गांवों को न छोड़ना पड़े।''

सिर्फ पांच हजार रुपये के अनुदान से युवा समूहों ने वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, खेल प्रतियोगिताओं और अन्य परंपरागत कार्यक्रमों का आयोजन किया है। इनके चलते सीमा पार नेपाल के कुछ लोगों समेत करीब दो हजार लोग एक साथ आपस में मिले हैं। यह पहल जल्दी ही अंतर-ग्रामीण संपर्क गतिविधियों की शुरुआत के रुप में विकसित हुई। युवा सहभागियों ने बताया कि उनका आत्मसम्मान बढ़ा है और उनके अपनी बात रखने के कौशल और पर्यावरण को बेहतर बनाने के विचारों को बढ़ावा मिला है।

आज चाय परियोजना करीब तीन सौ युवा लोगों को बाजार की मांग के अनुरूप किसी न किसी व्यावसायिक हुनर को हासिल करने में मदद कर रही है। *चाय* परियोजना के तहत पशु पालन, मधुमक्खी पालन, इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य छोटे कारोबारों को स्थापित करने में मदद दी जा रही है। सफलता की एक कहानी यहां तुरजुम की उन दो युवा महिलाओं के बारे में है जो दार्जिलिंग में पहला महिला ड्राइविंग स्कूल खोलने वाली हैं।

दस दिनों तक चलने वाले सालाना दार्जिलिंग समारोह में मैं अजय एडवर्ड्स से मिला। वह दार्जिलिंग के प्रसिद्ध रेस्टोरेंट ग्लेनेरी के मालिक हैं और समारोह के मुख्य आयोजक थे। अपने अंग्रेजी शैली के नाम (इसे उनके परदादा ने रखा था जिन्होंने ब्रिटिश गोरखाओं के साथ काम किया था) के बावजूद एडवर्ड्स नेपाली जातीय समुदाय से ताल्लुक रखते हैं। वह मुझे चाय समुदाय और दार्जिलिंग के संबंध के बारे में बताते हैं।

जब हम अपूर्व टिप्स ऑर्गेनिक चाय पी रहे थे तो एडवर्ड्स ने बताया, ''चाय उद्योग पहली बार दार्जिलिंग में आया, तो यह वरदान और शाप, दोनों की तरह था। इससे रोजगार मिलता है, पर यह हमेशा पेट भरने लायक रहा। हम चाय बागान समुदायों को आर्थिक तौर पर मजबूत बनाना चाहते हैं। अगर स्थानीय लोग ठीक-ठाक तरह से रोजी-रोटी कमाएंगे, तो स्थानीय युवा कस्बे में समस्याएं पैदा नहीं करेंगे। हम चाय परियोजना द्वारा समुदाय के लिए किए जाने वाले काम के लिए बहुत कृतज्ञ हैं।''

दार्जिलिंग चाय विश्व-प्रसिद्ध है और हॉलीवुड की कुछ फिल्मों में भी कुछ पात्र यह कहते हुए दिखाए जाते हैं, ''क्या मैं कुछ दार्जिलिंग उंड़ेल सकता हूं।'' दार्जिलिंग का मतलब है सर्वश्रेष्ठ चाय। अब अमेरिकियों को वही दार्जिलिंग चाय *ताजो* की किस्मों में मिलेगी। अमेरिकियों को इस बात का गर्व हो सकता है कि एक चाय कंपनी बागानों के श्रमिकों का शोषण नहीं कर रही है, बल्कि उनकी जिंदगी को बेहतर बनाने में मदद कर रही है। □

लेखक: *डैनियल बी. हेबर स्वतंत्र लेखक हैं और काठमांडो में रहते हैं।*